B.A Part- 2 (subsidiary) **Topic- Psychoanalytic Therapy**
Dr. Prabha Shree (Guest Faculty, Deptt of Psychology, Vaishali Mahila College, Hajipur)

मनोगत्यात्मक चिकित्सा मनश्चिकित्सा का सबसे लोकप्रिय एवं पुराना प्रारूप है। मनोगत्यात्मक चिकित्सा से तात्पर्य एक ऐसे मनोवैज्ञानिक उपचार दृष्टिकोण से होता है जिसमें व्यक्ति या रोगी के व्यक्तित्व गतिकी पर मनोविश्लेषणात्मक परिप्रेक्ष्य में बल डाला जाता है। इसे मनोविश्लेषण-उन्मुखी चिकित्सा (Psychoanalytically-oriented therapy) या **मनोविश्लेषिक चिकित्सा (Psychoanalytic Therapy)** भी कहा जाता है।

इस चिकित्सा प्रविधि का प्रतिपादन सिगमंड फ्रायड द्वारा किया गया। सिगमंड फ्रायड को

psychotherapy का संस्थापक कहा जाता है। Freud अपने रोगियों का गहन परीक्षण किए और अपने प्राप्त अनुभूतियों के आधार पर मानव व्यक्तित्व की गतिकी तथा संरचना, मनोविकृति के स्वरूप तथा मनोवैज्ञानिक उपचार के बारे में विभिन्न तरह के प्राक्कल्पनाओं को विकसित किए। जिनसे मनोविश्लेषण को एक Psychotherapy की प्रविधि के रूप में विकसित होने का पर्याप्त मौका मिला। इस सिलसिले में उनकी महत्वपूर्ण कृति 'द इंटरप्रेटेशन ऑफ ड्रीम' (The Interpretation of Dream) जो 1900 में प्रकाशित हुई, सबसे अधिक महत्व रखता है।

Psychoanalytic therapy एक ऐसी गहन एवं दीर्घकालीन विधि है जिसमें दमित स्मृतियों,

चिंतन, डर, आशंकाओं एवं मानसिक संघर्षों जो संभवतः आरंभिक विकास में उत्पन्न समस्याओं के कारण पैदा होते हैं का पता लगाया जाता है तथा व्यक्ति को वास्तविकता के संदर्भ में व्यवहार करने में मदद करता है इस प्रविधि में ऐसा समझा जाता है कि दमित इच्छाओं एवं मानसिक संघर्षों में जब रोगी को सूझ उत्पन्न हो जाता है तो रोगी स्वयं ही उनके दमन एवं अन्य संबंधित रक्षात्मक प्रक्रमों पर अपनी ऊर्जा बर्बाद नहीं करता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अपने व्यक्तित्व गतिकी को विभिन्न चिंताओं व आशंकाओं से उत्पन्न समस्याओं को चेतन पर ही समझाने की कोशिश करता है। इससे उनमें उत्तम व्यक्तित्व संगठन उत्पन्न होता है तथा उसके जीवनशैली में सुधार आता है।